अध्याय- 4

सूचना स्रोत एवं राजनीतिक स्तर

सूचना-स्रोत एवं राजनीतिक स्तर

आधुनिक समाज में वैज्ञानिक सैद्धान्तीकरण का एक प्रमुख क्षेत्र सूचना सम्प्रेषण से सम्बन्धित सिद्धान्त और अवधारणायें हैं। ड्यूस, के.डब्लू. (1953)[1] ड्यूस, के.डब्लू. (1963)[2] ल्यूशियन पाई (1963)[3] माइकल रस, फिलिप अल्ताफ (1971)[4] रावर्ट डाउजे एवं जान ह्यूज (1972)[5] रेन्सन (1977)[6] सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया को ''मानव समाज का जाल'' कहा गया है। सभी प्रकार के सामाजिक जीवन का अध्ययन सम्प्रेषण संरचना को केन्द्र-सिद्ध मानकर किया जा सकता है। क्योंकि व्यक्ति और व्यक्ति का प्रत्येक सम्बन्ध उसके सूचनाओं के आदान-प्रदान की क्षमता पर आश्रित है। सूचना सम्प्रेषण की प्रक्रिया की प्रमुख भूमिका इस प्रकार बतलाई गयी है।

1. सम्प्रेषण स्रोतों से जिस प्रकार की सूचनायें प्राप्त होती है उनके द्वारा समाज की मूल्यात्मक व्यवस्था का निर्धारण होता है।
2. सम्प्रेषण संरचना का आंकार अर्थात सूचना के वृहद साधन और स्रोतगण समाज के आर्थिक विकास के प्रतिविम्बित करते हैं।

3. सम्प्रेषण प्रक्रिया का अन्तर्जाल जिससे यह निर्धाति होता है कि सूचनायें कहां प्रसारित हो रही हैं और उनका उपयोग कौन तथा किस प्रकार कर रहा है, इसके द्वारा समूह के सामन्जस्य और सुदृढ़ता का आभास मिलता है।
4. सम्प्रेषण साधनों का स्वामित्व अर्थात सम्प्रेषण प्रक्रिया के नियंत्रण और सउद्देश्य उपयोग की प्रक्रियायें किसी व्यवस्था के राजनीति दर्शन को प्रतिविम्बित करती है। (स्कैम: 1963 !34)[7]

व्यापक अर्थ में सम्प्रेषण प्रक्रिया का सम्बन्ध सम्पूर्ण मानवीय क्रिया-कलापों से है जिसके माध्यम से वह निर्दिष्ट अथवा अनर्दिष्ट सूचनाओं का आदान-प्रदान करता है। सीमित अर्थ में सम्प्रेषणक की प्रक्रिया का सम्बन्ध सूचनाओं के प्रसार के वृहद साधनों जैस- समाचार पत्र, रेडियो, टी.वी., फिल्म इत्यादि से लिया जाता है। आधुनिक प्रौद्योगिकीय समाज में सूचनाओं के प्रसारण के ये साधन आकार की दृष्टि से अत्यन्त व्यापक तथा प्रभाव की दृष्टि से अत्यन्त परिणाम मूलक है।

सूचना सम्प्रेषण के ये वृहद साधन सम्पूर्ण समाज के विचार क्रिया और व्यवहार को नियन्त्रित करते है। सामाजिक राजनीतिक जागरूकता तथा सहभागिता की वृद्धि आर्थिक विकास की प्रक्रिया को शक्तिशाली और प्रभावी बनाने में तथा समाज में

एक विशिष्ट वैचारिकी परिवेश को निर्मित करने में सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधनों का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान है। विकासशील समाजों में कुछ महत्वपूर्ण अध्ययनों द्वारा यह विदित होता है कि परम्परागत समाज को आधुनिक समाज की ओर ले जाने में सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधनों का महत्वपूर्ण स्थान है। (डेनियर टर्नर-1957)[8] (1964)[9] (1968)[10] (1972)[11] मैथ्यूस और प्रोयो ने अपने अध्ययन द्वारा यह पाया है कि दक्षिणी अमेरिका के निम्न वर्गीय समुदाय के व्यक्तियों के आधुनिकीकरण में सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधन महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। वे परम्परागत जीवनशैली के विकल्पों की ओर आकर्षित हो रहे हैं। व्यक्तिगत प्रयत्न और परिश्रम को महत्व दे रही है तथा अपनें वर्तमान स्थिति परिवर्तन के लिए राजनैतिक सक्रियता को महत्व देने लगा है। (मैथ्यूस, प्रोयो-1966.263)[12]

वर्तमान अध्ययन के डोम जाति के अन्तर्गत सामाजिक राजनीतिक जागरूकता सक्रियता तथा परिवर्तन के प्रति उन्मुखता के अध्ययन के लिए सूचना सम्प्रेषण के वृहद साधन के प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत अधयाय का प्रमुख विश्लेषण बिन्दु है। यह ज्ञात करने का प्रयत्न किया जा रहा है कि समाचार पत्र, रेडियो, फिल्म, टी.वी. में किस मात्रा में सूचनादाता रूचि रखते हैं। साथ ही भृमण तथा सूचनाओं के आदान-प्रदान और परस्पर विचार में

उनके अभिरूचियों का स्वरूप क्या है? सूचना सम्प्रेषण के इन औपचारिक और अनौपचारिक अभिकरणों में सहभागिता के द्वारा उनके वि स्तर को ज्ञात करने का प्रयत्न किया जा रहा है।

उत्तरदाताओं को सूचना प्राप्ति के स्रोत का विवरण स्तर

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत डोम जाति में सूचना सम्प्रेषण स्रोत के माध्यम के विकल्प साधनों की विवरण प्रस्तुत तथ्यगत आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है जिसमें कि 70 (16.00) प्रतिशत उत्तरदाता अखबार पढ़ने से व 53 (17.67) प्रतिशत उत्तरदाता रेडियो द्वारा व 46 (15.33) प्रतिशत उत्तरदाता टी.वी., 55 (18.33) प्रतिशत उत्तरदाता ने सूचना प्राप्त करने में अन्य व्यक्ति के द्वारा सूचना पाने की बात को स्पष्ट कहे तथा 68 (22.67) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जिन्होंने अपनी डोम जाति के जागरूकता के द्वारा प्राप्त सूचना को अपने सम्प्रेषण का माध्यम बतलाया है। प्रस्तुत आँकड़ों का विश्लेषण तथ्यगत तालिका सख्या 4.1 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.1

सूचना सम्प्रेषण के स्रोत की स्थिति

सूचना प्राप्ति के साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
अखबार	78	26.00
रेडियो	53	17.67
टी.वी.	46	15.33
अन्य व्यक्ति द्वारा	55	18.33
अपनी जाति के जागरूकता	68	22.67
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा समाचार पत्र का अध्ययन करने की स्थिति का विवरण

सूचना सम्प्रेषण के नवीन साधनों में समाचार पत्र का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है। समाचार पत्र न केवल दिन-प्रतिदिन घटित होने वाली क्षेत्रीय राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं की सूचना व्यक्ति को प्रदान करता है बल्कि समाचार प्रदत्त करने की शैली, समाचार की प्रकृति, समाचार समीक्षा इत्यादि का माध्यम से व्यक्ति के विचार और मनोवृत्तियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। आधुनिक समाज में समाचार-पत्र की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वस्तुतः परम्परागत समाजों के आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण सूचांक सामाजिक राजनैतिक विगोपन स्तर की उच्चता है। सामाजिक राजनैतिक विगोपन स्तर

के विस्तार में अन्य कारक इतनी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह नहीं करता जितना कि समाचार पत्र।

समाचार पत्रक अध्ययन के प्रकृति से सम्बन्धित उत्तरदाताओं ने विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि 62 (20.67) प्रतिशत उत्तरदाता नियमित, 96 (32.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी-कभी एवं 142 (47.33) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कभी नहीं समाचार पत्र के अध्ययन करने की बात को स्पष्ट कहे।

प्रस्तुत आँकड़ों का तथ्यगत विश्लेषण तालिका संख्या 4.2 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या-4.2

उत्तरदाताओं द्वारा समाचार पत्र अध्ययन करने की स्थिति की प्रवृत्ति का विवरण

समाचार पत्र अध्ययन की स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
नियमति	62	20.67
कभी-कभी	96	32.00
कभी नहीं	142	47.33
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा अध्ययन में लगाये गये समाचार पत्र की स्थिति का विवरण

उत्तरदाताओं द्वारा समाचार पत्र अध्ययन के अन्तर्गत समाचार पत्र के विविधता आधार पर यह स्पष्ट होता है कि 26 (17.72) प्रतिशत उत्तरदाता समाचार दैनिक पत्र (आज) व 32 (20.25) प्रतिशत उत्तरदाता (अमर उजाला) 18 (11.39) प्रतिशत उत्तरदाता (गांडीव) 36 (22.78) प्रतिशत उत्तरदाता (दैनिक जागरण) व 21 (13.29) प्रतिशत उत्तरदाता (हिन्दुस्तान) तथा 23 (14.57) प्रतिशत उत्तरदाता (सहारा समय) साप्ताहिक समाचार पत्र अध्ययन करने की बात को स्वीकार किया है।

प्रस्तुत अध्ययन तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.3 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.3

समाचार पत्र अध्ययन करने की प्रकृति का विवरण स्तर

समाचार पत्र की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
आज	28	17.72
अमर उजाला	32	20.25
गांडीव	18	11.39
दैनिक जागरण	36	22.78
हिन्दुस्तान	21	13.29
सहारा समय	23	14.57
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा रेडियों सुनने की स्थिति का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत सूचना सम्प्रेषण स्रोत में रेडियो की महत्वपूर्ण भूमिका है जिसमें प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण से इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 168 (56.00) प्रतिशत उत्तरदाता नियमित, 76 (25.33) प्रतिशत उत्तरदाता कभी-कभी और 56 (18.67) प्रतिशत उत्तरदाता कदाचित ही रेडियो सुनने की बातों को स्पष्ट कहा है।

प्रस्तुत आँकड़ों का विश्लेषण निम्न तालिका संख्या 4.4 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.4

उत्तरदाताओं के द्वारा रेडियो सुनने की प्रकृति का विवरण स्तर

रेडियों सुनने की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
नियमित	168	56.00
कभी-कभी	76	25.00
कदाचित ही	56	17.67
योग	300	100.00

रेडियो द्वारा प्रसारित कार्यक्रम को सुनने की प्रकृति

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत रेडियो सुनना सूचना सम्प्रेषण का एक अंग रहा है जो डोम जाति के लिए सुलभ साधन में एक है जिससे अधिकांशतः उत्तरदाता रेडियो सुनने व अपने मनपसन्द कार्यक्रमों के अमुखता स्पष्ट करते हुए व्यक्त किया है जिसमें 56 (22.00) प्रतिशत उत्तरदाता समाचार, 32 (10.67) प्रतिशत उत्तरदाता खेल समाचार व 88 (29.33) प्रतिशत उत्तरदाता गाना हैलो फरमाइश, 72 (24.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने पिटारा सुनने की बात को स्पष्ट कहा एवं 42 (14.00) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जिन्होंने अन्य प्रकार के कार्यक्रमों को सुनने की बातों को स्पष्ट कहा है।

प्रस्तुत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.5 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.5

रेडियो द्वारा प्रसारित प्रोग्रामों को सुनने की प्रकृति का विवरण

रेडियों द्वारा प्रसारित कार्यक्रम	आवृत्ति	प्रतिशत
समाचार	56	22.00
खेल	32	10.67
गाना-हैलो फरमाइश	88	29.33
पिटारा	72	24.00
अन्य	42	14.00
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा टी.वी. देखने की प्रकृति का विवरण

उत्तरदाताओं के बीच सूचना सम्प्रेषण के माध्यम में दृश्य-श्रव्य का माध्यम टी.वी. की लोकप्रियता अधिक बढ़ी है फिरभी सबके लिए अभी तक सहवता से उपलब्ध नहीं है। अध्ययन के अन्तर्गत डोम जाति के उत्तरदाताओं में उनके आर्थिक दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में सूचना का साधन में टी.वी. का न होने की प्रकृति को दृष्टिगोचर करते हुए प्राप्त आंकड़ों से विश्लषित किया जा रहा है जिसमें कि 72 (24.00) प्रतिशत उत्तरदाता नियमित, 93 (31.00) प्रतिशत उत्तरदाता कभी-कभी, 135 (45.00) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जिन्होंने टी.वी. के उपलब्ध न होने के कारण टी.वी. कदाचित ही नहीं देखने की बात कही।

प्रस्तुत तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.6 से स्पष्ट होता है, जो इस प्रकार रहा।

तालिका संख्या-4.6

रेडियो द्वारा प्रसारित प्रोग्रामों को सुनने की प्रकृति का विवरण

टी.वी. देखने की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
नियमित	72	24.00
कभी-कभी	93	31.00
कदाचित ही	135	45.00
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा टी.वी. के कार्यक्रम को देखन की प्रकृति

सूचना सम्प्रेषण व मनोरंजन करने की दृष्टि से दृश्य-श्रव्य साधन के अन्तर्गत टी.वी. को देखने की प्रकृति को बढ़ावा मिला है जिसके अन्तर्गत प्रसारित भिन्न-भिन्न कार्यक्रमों के तहत उत्तरदाताओं ने अपनी रूचि को स्पष्ट किया है जो प्राप्त तथ्यगत आकड़ों के विश्लेषण से इस प्रकार स्पष्ट होता है कि 68 (22.67) प्रतिशत उत्तरदाता समाचार, 48 (16.00) प्रतिशत उत्तरदाता खेल, 62 (20.63) प्रतिशत उत्तरदाता धारावाहिक व 82 (27.33) प्रतिशत उत्तरदाता फिल्म देखने की बात को स्पष्ट कहा एवं 40 (13.33) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जिन्होंने अपने अन्य कार्यक्रमों को देखने की बात को स्पष्ट कहा है। आकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान आधुनिक समय में फिल्म देखने वाले उत्तरदाताओं की प्रतिशतत: सर्वाधिक (27.33) प्रतिशत रहा जो ऑकड़ों का तथ्यगत विश्लेषण निम्न तालिका संख्या 4.7 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.7

टी.वी पर प्रसारित कार्यक्रम को देखने की प्रकृति का विवरण

टी.वी. पर प्रसारित कार्यक्रम	आवृत्ति	प्रतिशत
समाचार	68	22.67
खेल	48	16.00
धारावाहिक	62	20.67
फिल्म	82	27.33
अन्य	40	13.00
योग	300	100.00

फिल्म देखने की की प्रकृति

अध्ययन के अन्तर्गत डोम जाति के लोगों में वर्तमान समय में मनोरंजन की दृष्टि से फिल्म देखने की स्थिति में वृद्धि हुई स्पष्ट रहा, फिल्मों को समाज का दर्पण भी कहा जाता है, लेकिन आधुनिक मान्यता में इसे दर्पण तक सीमित नहीं किया जा सकता है फिल्म एक एक ऐसा सशक्त माध्यम है जिनसे समाज का एक बड़ा तबका प्रभावित होता है। फिल्मों के माध्यम से एक ओर जहां अपने परम्परा संस्कृति को पाषित किया जा सकता है वहीं समाज में हिंसा, नग्नता और नैतिक ह्रास का बीजारोपण भी करती है। वर्तमान अध्ययन में सूचनाताओं के सिनेमा देखने

की प्रकृति का अध्ययन करते हुए यह विदित होता है कि 98 (32.67) प्रतिशत उत्तरदाता 15 दिन में एक बार, 55 (18.33) प्रतिशत उत्तरदाता नियमित व 84 (28.00) प्रतिशत उत्तरदाता कभी-कभी व 63 (21.00) प्रतिशत उत्तरदाता तो ऐसे मिले जो फिल्म न देखने की बात को कही। प्रस्तुत आकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में सर्वाधिक 98 (32.67) प्रतिशत उत्तरदाताओं में फिल्म देखने की प्रवृत्ति सर्वाधिक रही है, जो प्रस्तुत तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण निम्न सारिणी संख्या 4.8 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.8

फिल्म देखने की प्रवृत्ति का विवरण

फिल्म देखने की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
15 दिनों में एक बार	98	32.67
नियमित	55	18.33
कभी-कभी	84	28.00
कभी नहीं	63	21.00
योग	300	100.00

फिल्म देखने के प्रकार

उत्तरदाता के फिल्म देखने की प्रवृत्ति का पुनः अध्ययन करते हुए उनसे पूछा गया कि वे किस प्रकार की फिल्म को देखना मुख्य रूप से पसन्द करते हैं। प्राप्त तथ्यों से यह विदित होता है कि 78 (26.00) प्रतिशत उत्तरदाता मार-धाड़, 53 (17.67) प्रतिशत उत्तरदाता पारिवारिक, 42 (14.00) प्रतिशत उत्तरदाता भक्ति व 75 (26.33) प्रतिशत उत्तरदाता हालीवुड अर्थात पाश्चात्य फिल्मों को देखने की बात कही तथा 48 (16.00) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे रहे जिन्होंने अन्य प्रकार के फिल्मों को देखने की बात को कहे। प्रस्तुत आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में उत्तरदाताओं के अन्तर्गत फिल्म देखने की प्रवृत्ति सर्वाधिक 79 (26.33) प्रतिशत उत्तरदाता पाश्चात्य सभ्यता से जुड़े फिल्मों को देखना अधिक पसन्द करते हैं और 78 (26.00) प्रतिशत उत्तरदाता वालीवुड की मार-धाड़ की फिल्म को देखना पसन्द करते हैं। डोम जाति के उत्तरदाताओं में समाज के दर्पण सिनेमा का इनके मानसिक स्तर व सामाजिक स्तर को अग्रसर करने व उनके व उनके रोचकता को स्पष्ट करती है, जो आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.9 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.9

उत्तरदाताओं द्वारा फिल्म देखने की प्रकृति की विविधता का स्तर

फिल्म में रूचि की प्रकृति	आवृत्ति	प्रतिशत
मार-धाड़	78	26.00
पारिवारिक	53	17.67
भक्ति	42	14.00
पाश्चात्य	79	26.33
अन्य	48	16.00
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा भ्रमण करने की स्थिति का विवरण- प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदाताओं के सूचना सम्बन्ध व उनके सामाजिक स्तर के अन्तर्गत उनके भ्रमण करने की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है, जिसमें भ्रमण व्यक्ति के विगोपन स्तर को विस्तृत करने, भारतीय संस्कृति, सामाजिक-आर्थिक संगठनों और जीवनशैली से परिचित होने का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण साधन रहा है। भारतीय समाज के संदर्भ में भ्रमण द्वारा व्यक्ति को एक ओर जहां भारत के अध्यात्मिक संस्कृति सम्पत्ति का बोध होता है वहीं दूसरी ओर इसके विभिन्न

समुदायों के मध्य आदान-प्रदान और राष्ट्रीय एकीकरण का मार्ग प्रशस्त होता है। सामाजिक जीवन में भ्रमण का स्थान और भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसके द्वारा डोम जाति के केवल भारतीय समाज की ऐतिहासिकता और सांस्कृतिक उपलब्धि और जीवनशैली का बोध होता है वरन यह जीवन के विभिन्न स्तरों आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन से भी परिचित होता है। भ्रमण से विकसित विगोपन का स्तर विधार्थियों की सामाजिक-आर्थिक गतिशीलता के विस्तार में सहयोगी भूमिका काक निर्वाह करता है। प्राप्त उत्तरदाताओं से स्पष्ट होता है कि 63 (21.00) प्रतिशत उत्तरदाता चित्रकूट, 42 (14.00) प्रतिशत उत्तरदाता वैष्णो देवी, 71 (23.67) प्रतिशत उत्तरदाता मैहर देवी व 51 (17.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य स्थानों पर भ्रमण करने की स्थिति को स्पष्ट व्यक्त किया है, जो प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.10 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-10

उत्तरदाताओं द्वारा भ्रमण किये गये स्थानों की स्थिति

भ्रमण स्थल	आवृत्ति	प्रतिशत
चित्रकूट	63	21.00
वैष्णो देवी	42	14.00
मैहर देवी	71	23.67
अयोध्या	73	24.33
अन्य	51	17.00
योग	300	100.00

भ्रमण करने की परिस्थिति का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत भ्रमण करने के स्थान के सम्बन्ध उत्तरदाताओं से भ्रमण के कारणों को पूछा गया तो वे अपने भ्रमण करने की परिस्थिति को इस प्रकार से स्पष्ट किया गया, जिसमें 46 (15.33) प्रतिशत उत्तरदाता ने पूजन-कार्य व 68 (22.67) प्रतिशत उत्तरदाता ने अन्य रिश्तों से सम्बन्ध रखने की बात को स्पष्ट कहा एवं 76 (25.33) प्रतिशत उत्तरदाता ने धार्मिक अनुष्ठान कार्य व 83 (27.65) प्रतिशत उत्तरदाता पर्व-व्रत आदि के कारण की स्थिति को स्पष्ट किया और 27 (9.00) प्रतिशत उत्तरदाता इस प्रकार से मिले जिन्होंने भ्रमण करने के अन्य कारणों को स्पष्ट व्यक्त किया जो तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.11 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.11

उत्तरदाताओं द्वारा भ्रमण करने की परिस्थिति का विवरण

भ्रमण करने की परिस्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
पूजा करने	46	15.33
रिश्तों से सम्बन्धित	68	22.67
अनुष्ठान/संस्कार	76	25.33
पर्व-नवरात	83	27.67
अन्य	27	9.00
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा राजनीतिक दल में सहानुभूति रखन की स्थिति का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदाताओं के राजनीतिक भूमिका में उनके द्वारा विभिन्न प्रकार के राजनीतिक दलों से अपनी सहानुभूति रखने की प्रकृति पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है जिसमें प्राप्त आँकड़ों के तथ्यगत विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि 226 (75.33) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जो अपनी सहमति व्यक्त की और 74 (24.67) प्रतिशत ऐसे उत्तदाता मिले जो सहानुभूति किसी प्रकार से राजनीतिक दलों में न रखने की बात कही। प्राप्त तथ्यगत आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि वर्तमान समय में डोम जाति के समुदायों में राजनीतिक भूमिका की स्थिति विकास के स्तर पर रही जिसमें सर्वाधिक 226 (75.00) प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अपनी सहमति व्यक्त कर स्पष्ट किया है जो प्राप्त तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.12 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.12

राजनीतिक दल के प्रति सहानुभूति की स्थिति का विवरण

राजनीतिक दलों में सहानुभूति	आवृत्ति	प्रतिशत
हां	226	75.33
नहीं	74	24.67
योग	300	100.00

उत्तरदाताओं द्वारा राजनीतिक दल के सदस्यों के प्रति सहानुभूति रखने की स्थिति का विवरण

प्रस्तुत अध्ययन के अन्तर्गत उत्तरदाताओं के राजनीतिक पक्ष पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया जिसमें प्राप्त तथ्यगत आँकड़ों के विश्लेषण से उत्तरदाताओं के द्वारा विभिन्न राजनीतिक दलों के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए स्पष्ट हुए स्पष्ट हुआ कि 62 (20.67) प्रतिशत उत्तरदाता काग्रेस पार्टी, 56 (18.67) प्रतिशत उत्तरदाता समाजवादी पार्टी एवं 98 (32.67) प्रतिशत उत्तरदाता बहुजन समाजवादी पार्टी तथा 36 (12.00) प्रतिशत उत्तरदाता राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी तथा 26 (8.66) प्रतिशत उत्तरदाता अपनादल व 22 (7.33) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जिन्होंने अन्य राजनैतिक दलों के प्रति अपनी सहानुभूति रखने की बात को स्पष्ट कहा। प्रस्तुत तथ्यगत आँकड़ों का विश्लेषण तालिका संख्या 4.13 से स्पष्ट होता है।

तालिका संख्या-4.13

उत्तरदाताओं द्वारा भ्रमण करने की परिस्थिति का विवरण

राजनीतिक दल	आवृत्ति	प्रतिशत
काग्रेस	62	20.67
समाजवादी पार्टी	56	18.67
बहुजन समाजवादी पार्टी	98	32.67
राष्ट्रीय क्रान्ति पार्टी	36	12.00
अपनादल	26	8.66
अन्य	22	7.33
योग	300	100.00

सारांश-

प्रस्तुत अध्याय में सूचना के स्रोत एवं राजनीतिक स्तर का तथ्यगत विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का सूचना स्रोत एवं राजनीतिक स्तर के अभिवृत्ति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है। उत्तरदाताओं के सूचना प्राप्ति के स्रोत के विवरण स्तर को ज्ञात करने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता सूचना प्राप्त के साधन के रूप में अखबारों का उपयोग करते हैं परन्तु रेडियो, टी.वी. आदि का भी उपयोग करते हैं। सूचना सम्प्रेषण स्रोत की स्थिति का विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वे विविध साधनों के प्रति जागरूक हैं। अधिकांश उत्तरदाता समाचार पत्रों का अध्ययन कभी-कभी (32.00) प्रतिशत, एवं नियमित (20.67) प्रतिशत करते हैं परन्तु (47.33) प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे मिले जो कभी-कभी समाचार पत्रों का अध्ययन करते हैं। समाचार पत्रों की प्रकृति के बारे में प्राप्त तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं में दैनिक जागरण अखबार के प्रति अधिक रूझान है। इस अखबार के बाद उत्तरदाता अमर उजाला अखबार के प्रति अधिक रूचि रखते हैं। उत्तरदाताओं द्वारा रेडियो सुनने की प्रकृति के प्रति तथ्यगत अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता (56.00) प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से रेडियो सुनते हैं। परन्तु

(18.67) प्रतिशत उत्तरदाता जो कदाचित ही रेडियो सुनते हैं। तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता रेडियो से प्रसारित कार्यक्रमों में गाना व समाचार आदि को सुनने में प्रमुखता दी है। टी.वी. देखने की प्रकृति पर विवेचना करने पर यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उत्तरदाता (45.00) प्रतिशत टी.वी. कदाचित ही देखते हैं परन्तु 24.00 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे थे जो नियमित रूप से टी.वी. दूरदर्शन देखते हैं। अधिकांश उत्तरदाता टी.वी. पर फिल्म, समाचार एवं धारावाहिक देखते है। फिल्म देखने की प्रवृत्ति के संदर्भ में अधिकांश उत्तरदाता ने कहा कि वे सुन्दर दिन में एक बार वह कभी-कभी फिल्म देखते हैं। अधिकांश उत्तरदाता मार-धाड़, पाश्चात्य फिल्म एवं पारिवारिक फिल्मों को देखना पसन्द करते हैं। अधिकांश उत्तरदाता स्थानों का भ्रमण करते हैं और धार्मिक स्थलों में जाकर देवी-देवताओं का दर्शन करके अपने परलोक सुधारने का प्रयास करते हैं। अधिकांश उत्तरदाता अनुष्ठान पर्व आदि का मानते हैं। अधिकांश उत्तरदाता राजनीतिक दलों के प्रति सहानुभूति रखते हैं तथा उसी के अनुरूप अपने प्रतिष्ठा का मूल्यांकन करते हैं। अधिकांश उत्तरदाताओं का राजनीतिक दलों के प्रति रूझान के संदर्भ में विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि वे बहुजन समाजवादी पार्टी प्रति निष्ठा रखते हैं। इस प्रकार तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है

कि उत्तरदाताओं में राजनीति के प्रति जागरूकता है और वे राजनीतिक दलों के प्रति वह स्वयं अपनी प्रतिष्ठा में अभिवृत्ति रखने का प्रयास करते हैं।

Reference

[1] Deush, K.V.,	Nationalism and Social Communication, the M.T.T. Press, 1953.
[2] Deush, K.W.,	The Nerves of Government, Newyark, the Free Press of Glance.
[3] Pyas Lucain,	Communication and Political Development Princeton, Prince, University, Press, 1963.
[4] Michal Russ and Altaff:-	An Introduction to Political Philip Sociology, Nelson Lodon, 1971.
[5] Dowse, R.E. Hughs, J.A.:-	Political Sociology, John Willey & Sons London, 1972
[6] Renshon, S.A.,	Hand Book of Political Socialization, Theory and Research, The Free Press, Mac-Millon, 1977.
[7] Scharm, W.,	Communications Development and the Developmental Process in Lucion, Psyes (Eds) Communication and Political Development, Princeton, Prince tom University Press, 1963, P.34.
[8] Lerner Daniel,	Behavioral Sciences, Vol, 2 No.4 Oct, 1957.
[9] Lerner Daniel,	The Passing of Traditional Sociology, Modernization the middle East, Glencoe, I.H., The Free Press, 1958 Also 1964.

---

[10] Lerner Deniel, Sciences, — Social Modernization Social Aspects in Internal Encyclopedia of Social Newark, Macmillon. G.,1968 Vol.x, P. 386-396.

[11] Lerner Deniel, — Towards A Communication Theory a Set of Consideration in lucian, W.P. Communication and Political Development, New Delhi, Radha Krishna Prakashan 1972, P.327-350.

[12] Mathews, D.R., Parothro, J.W., — Neg ras and the Newyark, Harcourt and Brace & Word, 1966, P.263.